जैन विद्या भाग 2 प्रश्नोत्तर

पाठ क्रमांक 1 (अर्हत् वंदना)

1. अर्हत वंदना का कोई एक सूत्र लिखो?

अप्रमाद सूत्र
उट्ठिए णो पमायए।
सव्वतो पमत्तस्स भयं ,
सव्वतो अपमत्तस्स णत्थि भयं

2. "खामेमि सव्वजीवे " इस पद्य को पूरा करो?

खामेमि सव्वजीवे,सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु,वेरं मज्झ न केणई।

3. "सच्चं लोयम्मि सारभूयं" यह पद्य किस सूत्र का है?

सत्य सूत्र।

4. अर्हत वंदना का मंगलसूत्र लिखो?

अरहंता मंगलम
सिद्धा मंगलम्
साहू मंगलम्
केवली पण्णतो धम्मो-मंगलम्
अरहंता लोगुत्तमा
सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो
अरहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहू सरणं पवज्जामि
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।।

5. भावभीनी वंदना के कोई दो पद्य लिखो?

भावभीनी वंदना भगवान चरणों में चढ़ाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाएं।।
(1) ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उर्वरा में, लक्ष्य तरुवर लहलहाए।।1।।
(2) धर्म है समता हमारा कर्म समतामय हमारा।
साम्य योगी बन हृदय में स्त्रोत समता का बहाएं।।2।।

पाठ क्रमांक 2 (पंचपद वंदना)

1. पच्चीस गुणों से सुशोभित कौन होता है?

उपाध्याय।

2. साधु-साध्वियों में कितने गुण पाए जाते हैं?

27

3. परम अर्हता संपन्न पद को पूरा लिखे?

परम अर्हता संपन्न चार घनघाती कर्म का क्षय कर अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत शक्ति और आठ प्रातिहार्य- इन 12 गुणों से सुशोभित 34 अतिशय, 35 वचनातिशय से युक्त, धर्म- तीर्थ के प्रवर्तक, वर्तमान तीर्थंकर सीमंधर आदि अर्हतों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणति पूर्वक भावभीनी वंदना।

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलम् देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

4. आचार्य की संपदाओं का उल्लेख करें?

आचार्य 8 गणि संपदा से सुशोभित होते हैं।
आचार संपदा,श्रुत संपदा, शरीर संपदा,वचन संपदा, वाचना संपदा, मति संपदा,प्रयोग संपदा, संग्रह-परिज्ञा संपदा।

पाठ क्रमांक 3 (पच्चीस बोल(11-25))

1. श्रावक के 12 व्रत कौन-कौन से हैं?

श्रावक के 12 व्रत
अहिंसा अणुव्रत
सत्य अणुव्रत
अस्तेय अणुव्रत
ब्रह्मचर्य अणुव्रत
अपरिग्रह अणुव्रत
दिग् परिमाण व्रत
भोगोपभोग परिमाण व्रत
अनर्थ दंड विरमण व्रत
सामायिक व्रत
देशावकाशिक व्रत
पौषधोपवास व्रत
अतिथि (यथा)संविभाग व्रत

2. जीवास्तिकाय का गुण कौनसा होता है?

चैतन्य गुण

3. अट्ठारहवां बोल लिखे?

अट्ठारहवां बोलः- दृष्टि 3
सम्यग् दृष्टि
सम्यग् मिथ्यादृष्टि
मिथ्यादृष्टि

4. वैमानिक देवों का दंडक बताएं?

चौबीसवां

5. आश्रव के भेदों का उल्लेख करें?

आश्रव के 20 भेद-

मिथ्यात्व आश्रव

अव्रत आश्रव

प्रमाद आश्रव

कषाय आश्रव

योग आश्रव

प्राणतिपात आश्रव

मृषावाद आश्रव

अदत्तादान आश्रव

मैथुन आश्रव

परिग्रह आश्रव

श्रोत्रेन्द्रिय प्रवृत्ति आश्रव

चक्षुरिन्द्रिय प्रवृति आश्रव

घ्राणेंद्रिय प्रवृत्ति आश्रव

रसनेन्द्रिय प्रवृत्ति आश्रव

स्पर्शनेन्द्रिय प्रवृति आश्रव

मन प्रवृत्ति आश्रव

वचन प्रवृत्ति आश्रव

काय प्रवृत्ति आश्रव

भंडोपकरण रखने में अयत्ना करना आश्रव

शुचि कुशाग्र मात्र दोष सेवन आश्रव।

पाठ क्रमांक 4 (अणुव्रत गीत)

1. अणुव्रत गीत के दो पद लिखो?

संयम मय जीवन हो।
नैतिकता की सुर -सरिता में जन जन मन पावन हो।
(1) अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।
वर्ण, जाति या संप्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा ।
छोटे-छोटे संकल्पों से, मानस परिवर्तन हो।।
(2) मैत्रीभाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए।
समता, सह -अस्तित्व समन्वय -नीति सफलता पाये
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो।

2. अणुव्रत गीत का तीसरा पद कौन सा है?

विद्यार्थी या शिक्षक हो ,मजदूर और व्यापारी ।
नर हो नारी, बने नीतिमय, जीवन-चर्या सारी ।
कथनी-करनी की समानता, में गतिशील चरण हो।।

3. "कथनी करनी की समानता"..... इस पंक्ति को पूरा करो?

कथनी करनी की समानता, में गतिशील चरण हो।।

पाठ क्रमांक 5 (अमर रहेगा धर्म हमारा)

1. अमर रहेगा धर्म हमारा के रचनाकार कौन है?

आचार्य श्री तुलसी

2. गीत के कोई दो पद्य लिखें?

(1) धर्म धरातल अतुल निराला,
सत्य अहिंसा- स्वरूप वाला।
मैत्री का यह मधुमय प्याला,
सत्पुरुषों ने सदा रूखारा।।

(2) व्यक्ति- व्यक्ति में धर्म समाया,
जाति-पांति का भेद मिटाया।
निर्धन -धनिक न अंतर पाया ,
जिसने धारा जन्म सुधारा।।

3. धर्म नाम..... से पद को पूरा करें?

धर्म नाम से शोषण करते ,
धर्म नाम से निज घर भरते।
धर्म नाम से लड़ते- भिड़ते
कैसा धर्म बना बेचारा।।

पाठ क्रमांक 6 (प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव)

1. ऋषभ देव कौन थे? उनका जन्म किस काल विभाग में हुआ?

ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर थे। उनका जन्म तीसरे काल विभाग (आरे)में हुआ।

2. ऋषभदेव ने अपने पुत्र को कितनी कलाएं सिखाई?

72 कलाएं

3. भरत चक्रवर्ती को केवल ज्ञान किस स्थान में हुआ?

कांच के महल में शरीर की प्रेक्षा करते करते केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

4. बाहुबली को केवल ज्ञान क्यों नहीं हुआ?

बाहुबली को केवल ज्ञान अपने अहम् के कारण नहीं हुआ।

5. प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव पाठ में वर्णित जानकारी अपने शब्दों में लिखो?

जैन परंपरा में काल के दो विभाग बताए गए हैं- उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी। प्रत्येक काल विभाग में 6-6 आरे होते हैं। वर्तमान में अवसर्पिणी काल का पांचवा विभाग(दु:षमा आरा) चल रहा है ।तीसरे कालविभाग में ऋषभदेव का जन्म हुआ।

परिवार :-

ऋषभ की माता मरुदेवा और पिता कुलकर नाभि थे।ऋषभ ने यौवनावस्था में सुनंदा और सुमंगला दोनों के साथ विवाह किया। सुनंदा ने एक पुत्री सुंदरी और एक पुत्र बाहुबली को तथा सुमंगला ने एक पुत्री ब्राह्मी और भरत आदि 99 पुत्रों को जन्म दिया।

राजा पद:-

भगवान ऋषभ के समय यौगलिक युग था ।कल्पवृक्षों से लोगों की आवश्यकताएं पूरी होती थी। राजा ऋषभ उस युग के प्रथम राजा बने। नगर बसाए गए और असि(सुरक्षा) मसि(व्यवसाय) कृषि(खेती)सेवा आदि कर्तव्यों का निर्देश दिया। अपने पुत्र भरत को 72 कलाएं ,पुत्री ब्राह्मी को 18 लिपियों और सुंदरी को गणित का अध्ययन करवाया। सब अपने अपने कार्य में दक्ष बन गए तब ऋषभ अपने पुत्रों को अलग-अलग राज्यों का भार सौंप कर चैत्र कृष्णा अष्टमी को मुनि बन गए।

केवल ज्ञान व निर्वाण:-

1000 वर्ष की साधना के बाद उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हो गया।98 पुत्रों ने भी भगवान् ऋषभ के पास दीक्षा ले ली। भगवान् ऋषभ एक लाख पूर्व तक श्रामण्य का पालन कर निर्वाण को प्राप्त हो गए।

पारिवारिक सदस्यों को केवल ज्ञान प्राप्ति:-

भरत कांच के महल में प्रेक्षाध्यान कर रहे थे वहां बैठे बैठे ही केवली हो गए। बाहुबली ने अहम् के कारण भगवान ऋषभदेव के पास दीक्षा नहीं ली ।स्वयं दीक्षित होकर 1 वर्ष तक कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े रहे ।ब्राह्मी व सुंदरी के उपदेश से अहं टूटा और केवली हो गए।

माता मरुदेवा भगवान् ऋषभदेव के दर्शन करने हाथी पर चढ़कर गई भगवान को समवसरण में देखते ही उनकी भावना में उत्कर्ष आया और हाथी पर बैठे बैठे ही केवल ज्ञान कर मुक्त हो गई।

पाठ क्रमांक 7 (भगवान् पार्श्वनाथ)

1. पंचाग्नि तापते हुए तापस को राजकुमार पार्श्वनाथ ने तपस्या छोड़ने को क्यों कहा?

राजकुमार पार्श्वनाथ ने अपने अवधि (विशिष्ट)ज्ञान से देखा कि धांय धांय जलते हुए लकडों में से एक लकड़े की खोखाल में सांप का एक जोड़ा तिलमिला रहा है तब राजकुमार पार्श्वनाथ ने पंचाग्नि तापते हुए तापस को ऐसी अज्ञान तपस्या छोड़ने को कहा।

2. लक्कड़ फाड़ने पर सांप का जोड़ा निकला तो राजकुमार ने क्या किया?

लक्कड़ फाड़ने पर सांप का जोड़ा निकला तो उसमें झुलसा हुआ सांप का जोड़ा निकला। राजकुमार पार्श्व ने सर्प सर्पिणी को नमस्कार मंत्र सुनाया और समभाव रखने का उपदेश दिया ।उन्होंने राजकुमार के उपदेश को शिरोधार्य कर सद्भावना के साथ जीवन को समाप्त किया ।दोनों मर कर असुर कुमार देवताओं के अधिनायक धरणेन्द्र और पद्मावती हुए।

3. भगवान पार्श्वनाथ की आयु कितनी थी ?उनके विहार क्षेत्र कौन-कौन से थे?

भगवान पार्श्वनाथ की आयु 100 वर्ष थी। उनके विहार क्षेत्र बिहार कुरु ,कौशल, काशी, अवन्ति, अंग ,बंग ,कलिंग, पांचाल, मगध ,विदर्भ, दशार्ण ,कर्नाटक, कश्मीर आदि थे।

4. भगवान पार्श्वनाथ का संक्षिप्त परिचय लिखो?

भगवान पार्श्वनाथ जैन शासन के 23वे तीर्थंकर थे।उन का जन्म वाराणसी में हुआ। पिता का नाम अश्वसेन,माता का नाम वामा देवी था।

विक्रम पूर्व 8 वीं शताब्दी के लगभग भारत वर्ष के कोने-कोने में हठयोग का बोलबाला था ।लोग वास्तविक धर्म को छोड़ बाहरी दिखावे में बह चुके थे ।उन्हीं दिनों की बात है बनारस के बाहर बगीचे में एक साधु पंचाग्नि तप रहा था ।वहां राजकुमार पार्श्व टहलते हुए आ पहुंचे जहां पंचाग्नि तप के दर्शनार्थ एक बड़ी भीड़ जमा हो रही थी। राजकुमार ने अपने अवधिज्ञान से देखा कि धांय धांय जलते हुए लकड़ों में से एक लकड़े की खोखाल में सांप का एक जोड़ा

तिलमिला रहा है ।राजकुमार ने जनता और उस तपस्वी को सावधान करते हुए कहा कि ऐसी अज्ञान तपस्या को तिलांजलि दे दो जिसमें सांप जल रहे हों। यह सुनते ही वह साधु चौंका और राजकुमार की बात पर बिगड़ गया। राजकुमार के आदेश से सेवकों ने उस लक्कड़ को फाड़ा तो उसमें से झुलसा हुआ सांप का जोड़ा निकला। राजकुमार ने सर्प- सर्पिणी को नमस्कार मंत्र सुनाया और समभाव रखने का उपदेश दिया। उन्होंने राजकुमार के उपदेश को शिरोधार्य कर सद्भावना के साथ जीवन को समाप्त किया ।दोनों मरकर असुर कुमार देवताओं के अधिनायक धरणेंद्र और पद्मावती हुए। कुछ समय बाद राजकुमार पार्श्व ने दीक्षा ले ली।

केवलज्ञान प्राप्ति

एक बार अहिच्छत्र वन में भगवान पार्श्वनाथ ध्यानस्थ खड़े थे।उस समय कोई पूर्व जन्म का द्वेषी देव उधर से जा रहा था। उन्हें देखते ही उस का वैर जागृत हो गया और भगवान् को अनेक उपसर्ग दिए। नाग नागिन धरणेंद्र पद्मावती ने अवधि ज्ञान से देखा कि हमारे उपकारी भगवान पार्श्व को कोई दुष्ट देव उपसर्ग दे रहा है। तत्काल दोनों नीचे आए और उन पर सर्प फण की छाया करके उनका उपसर्ग शांत किया। उसी समय उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्होंने चार तीर्थ की स्थापना की।अहिंसा,सत्य आदि का प्रचार किया।

विहार क्षेत्र --

बिहार,कुरु,कौशल,काशी,अवंति,अंग,बंग,कलिंग,पांचाल,मगध,विदर्भ,दशार्ण, कर्नाटक,कश्मीर आदि।

निर्वाण-100 वर्ष की आयु पूर्ण कर के श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन सम्मेदशिखर पर्वत(झारखण्ड राज्य) पर मुक्त हुए।उसे आज पार्श्वनाथहिल भी कहा जाता है।

पाठ क्रमांक 8 (आचार्य श्री भारमलजी(1))

1. भारमल जी स्वामी ने सागार अनशन क्यों किया?

भीखण जी भारमल जी के पिता के पिता को अपने साथ नहीं रखना चाहते थे ।इसलिए किशनोजी अपने पुत्र को भीखण जी के साथ नहीं रखना चाहते थे ।तब किशनो जी भारमल जी को संघ से अलग करके ले गए जबकि भारमल जी स्वामी भीखण जी के साथ रहना चाहते थे।इसलिए भारमलजी ने सागार अनशन कर लिया।

2. आचार्य भीखणजी ने किशनो जी को अपने साथ में क्यों नहीं रखा?

किशनोजी अत्यंत क्रोधी स्वभाव के थे। इसलिए आचार्य श्री भीखण जी ने किशनोजी को अपने साथ नहीं रखा।

3. भारमल जी स्वामी के अनशन का पारणा कितने दिन बाद हुआ?

भारमल जी स्वामी के अनशन का पारणा दो दिन बाद हुआ।

4. आचार्य भारमल जी का जन्म कहां हुआ?

आचार्य भारमल जी का जन्म मेवाड़ के मुहां ग्राम में हुआ।

5. आचार्य श्री भारमल जी के मुख्य प्रसंग को स्पष्ट करो।

आचार्य श्री भारमल जी तेरापंथ के द्वितीय आचार्य थे। उनका जन्म वि. संवत 1804 में हुआ। उनके पिता व माता का नाम किशनो जी- धारिणी था।

10 वर्ष की अवस्था में स्थानकवासी सम्प्रदाय में आचार्य भीखण जी के पास अपने पिता के साथ दीक्षा ले ली ।

आचार्य भीखण जी किशनो जी को अपने पास रखना नही चाहते थे।क्यों कि वह बहुत क्रोधी स्वभाव के थे।

किशनो जी ने कहा कि आप मुझे नही रखोगे तो मैं अपने पुत्र को भी आप के पास नहीं रखूंगा और भारमल जी को लेकर संघ से अलग हो गए।

भारमल जी ने फिर अपने पिता से कहा मैं आपके साथ रहूंगा लेकिन आपके हाथों से चारों आहार पानी लेने का जीवन पर्यन्त त्याग है।

बालक के दृढ़ निशचय के आगे किशनोजी को झुकना पडा।भारमल जी को भीखण जी के पास पुनः सौंपते हुए कहा किआप ही इसे पारणा कराओ। और मेरी कहीँ व्यवस्था कर दो।तब भीखण जी ने किशनोजी को जयमलजी के पास सौंप दिया।

निर्भीकता-

एक बार भीखण जी का प्रथम चातुर्मास केलवा में था रात को मुनि भारमल जी परिष्ठापन करने के लिए बाहर गए वापस आते समय उनके पैर में सांप लिपट गया।वे वहीँ स्थिर होकर खड़े रहे ।

कुछ समय बाद जब भीखण जी को पता चला तब उन्होंने बाहर आकर सर्प को नमस्कार महामन्त्र सुनाया ।सर्प तत्काल पैर छोड़कर वहां से निकल गया।

6. आचार्य भारमल जी की निर्भीकता का घटना प्रसंग स्पष्ट करें ।

भारमल जी स्वामी बचपन से ही बड़े निर्भीक प्रवृत्ति के थे ।एक बार केलवा की अंधेरी ओरी में रात्रि के समय परिष्ठापन के लिए बाहर गए, वापस आते समय मार्ग में एक सांप उनके पांव में लिपट गया तो वे वहीं शांत मुद्रा में खड़े हो गए । भिक्षु स्वामी को जब इस बात का पता चला तब वे बाहर आए और नवकार मंत्र व मंगल पाठ का उच्चारण किया। सर्प तत्काल पांव छोड़कर वहां से चला गया ।14 वर्ष की अल्प आयु में भारमल जी स्वामी के जीवन से जुड़ा हुआ यह प्रसंग उनकी निर्भीकता को दर्शाता है जो वास्तव में आश्चर्यजनक थी।

पाठ क्रमांक 9 (आचार्य श्री भारमलजी (2))

1. भारमल जी के लिए तेले का दंड क्यों निश्चित किया गया?

स्वामी भीखण जी संघ में कोई भी नियम बनाते तो पहले- पहल भारमल जी स्वामी पर लागू करते ।इसीलिए स्वामी जी ने भारमल जी को कहा अगर तुम्हारे में ईर्या समिति की कोई त्रुटि बता देगा तो तुझे तेला करना होगा।

2. भारमल जी स्वामी कितने वर्षों तक युवाचार्य रहे?

28 वर्षों तक।

3. आचार्य श्री भारमल जी के शासनकाल में कितने साधु-साध्वियां दीक्षित हुए?

38 साधु 44 साध्वियां।

4. भारमल जी स्वामी के उत्तराधिकारी कौन थे?

रायचंद जी।

5. आचार्य श्री भारमल जी के स्वर्गवास का संवत् बताओ?

वि.सं.1878।

पाठ क्रमांक 10 (आचार्य रायचंदजी)

1. ऋषि राय ने एक साथ कितने मील की यात्रा की थी?

1400 मील

2. रायचंद जी ने संघ में क्या सुधार किया था?

रायचंद जी स्वामी ने तेरापंथ धर्म संघ के प्रत्येक साधु साध्वी के लिए तंबाकू पर नियंत्रण कर इस प्रवृत्ति को संघ से समूल उठा दिया।

3. "कोई राजपूत है" इस कथन का आशय क्या था?

ऋषि राय जब विहार कर रहे थे तब रास्ते में डाकुओं ने घेर लिया था। तब उन्होंने जोर से आवाज देते हुए कहा-सारे गोले ही गोले एकत्रित हुए हो या कोई राजपूत भी है? क्योंकिउनका मानना था कि राजपूत जाति के लोग इतने पतित नहीं होते कि वे संतों को भी लूटने का साहस करे।

4. नखेद का ऋषि राय ने क्या अर्थ बताया?

मेवाड़ में निषिध का उच्चारण नखेद करते थे लेकिन ऋषि राय ने इसे भिन्न अर्थ में 'न खेद' करते हुए कहा कि हमें किसी प्रकार का खेद नहीं होगा।

5. आचार्य रायचंद जी का संक्षिप्त जीवन परिचय बताओ।

तेरापंथ धर्म संघ के तृतीय आचार्य श्री रायचंद जी थे ।

जन्म व परिवार:-

आपका जन्म राजस्थान के उदयपुर डिवीजन में बड़ी रावलिया में विक्रम संवत 1847 में एक संपन्न परिवार में हुआ । पिता का नाम शाह चतरोजी जी एवं माता का नाम कुशलांजी था ।

विशेषताएं:-

रायचंदजी की दीक्षा भीखणजी के हाथों विक्रम संवत् 1857 को चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को हुई । अल्प समय में अनेक सूत्र कंठस्थ कर लिए ।इनकी व्याख्यान शैली मधुर एवं गुंजायमान थी ।

युवाचार्य पद :-

आचार्य श्री भारमल जी के द्वारा युवाचार्य पद के लिए खेतसीजी तथा रायचंद जी , दो व्यक्तियों का उल्लेख करने पर मुनि जीतमल जी ने करबद्ध निवेदन किया कि आप एक नाम की घोषणा करें । इस सुझाव से मुनि रायचंद जी को विक्रम संवत्1878 वैशाख कृष्ण नवमी को युवाचार्य मनोनीत किया ।

आचार्य काल :-

आचार्य रायचंदजी का जीवन निरोगी एवं स्वास्थ्यवर्धक था । इनके शासनकाल में अनेक तपस्याएं उल्लेखनीय रही ।ऋषिराय ने तेरापंथी साधुओं के लिए तंबाकू पर नियंत्रण लगाया । ऋषिराय बड़े निर्भीक व्यक्ति थे और मुहूर्त पर

अधिक विश्वास नहीं रखते थे ।रायचंद जी ने जीवन में लंबी-लंबी पदयात्रा की । मालव में जानेवाले प्रथम आचार्य थे।गुजरात,सौराष्ट्र,कच्छ में सर्वप्रथम उन्हीं का पदार्पण हुआ । थली में प्रथम चातुर्मास बीदासर में किया ।

स्वर्गवास:-

आचार्य श्री रायचंद जी विहारयात्रा में विक्रम संवत 1908 माघ कृष्णा चतुर्दशी के दिन छोटी रावलिया पधारे । वहां पर शाम के समय श्वास का प्रकोप बढ़ा एवं देखते ही देखते आयुष्य पूर्ण हो गया । वे दिवंगत हो गए ।

साधु - साध्वी:-

ऋषिराय के शासनकाल में 245 दीक्षाएं हुई , उनमें 77 साधु और 168 साध्वियां थी ।

पाठ क्रमांक 11 (आचार्य जीतमलजी)

1. जयाचार्य का जन्म कौन से गांव में हुआ था?

   मारवाड़ में जोधपुर डिवीजन के रोयट गांव में।

2. जयाचार्य की दीक्षा किसके हाथों हुई?

   जयाचार्य की दीक्षा रायचंद जी के हाथों हुई।

3. जयाचार्य की एकाग्रता की घटना क्या है?

   जयाचार्य तेरापंथ धर्मसंघ के चौथे यशस्वी आचार्य थे ।जयाचार्य की एकाग्रता बहुत जबरदस्त थी ।मुनि अवस्था में जब वे बाल साधु थे उस समय की घटना है कि वे हेमराज जी स्वामी के साथ पाली आए वे वहा बाजार की दुकान में ठहरे जहां मुनि जीतमल अपनी लेखना कर रहे थे वही पर एक नट मंडली भी आई हुई थी लोगों की भीड़ जमा थी नट मंडली का खेल आरंभ हुआ पूरे नाटक के समय में मुनि जीतमल ने एक बार भी आंख उठाकर नाटक की ओर नहीं देखा वे तन्मय होकर अपना लिखना करते रहे ।तेरापंथ का एक द्वेषी व्यक्ति - यह सब लगातार देख रहा था ।अंत में उसने जयाचार्य की एकाग्रता देखकर यही कहा जिस धर्म संघ में एक बाल साधु भी इतना दृढ और संयम ग्रहित है उसकी जड़ कोई नहीं खोद सकता इसलिए मै कहता हूं कि तेरापंथ की जड़ को आगामी

100 वर्षों तक तो कोई हिला नहीं सकता। इस घटना से ज्ञात होता है कि जयाचार्य इतने संयम गर्वित थे ।जो विरोधी तेरापंथ की आलोचना करने वाले थे वे भी उनके समक्ष नतमस्तक हो गए।

4. 19 वर्ष की अवस्था में कौन से सूत्र का पद्यानुवाद किया था?

19 वर्ष की अवस्था में जैनागम प्रज्ञापना सूत्र का पद्यानुवाद किया।

5. जयाचार्य का जीवन परिचय लिखो ।

आचार्य जीतमल जी तेरापंथ धर्म संघ के प्रतिभाशाली आचार्य थे।

जन्म व परिवार :

आचार्य जीतमल का जन्म जोधपुर डिवीजन के रोयट गांव में विक्रम संवत 1860 की आश्विन शुक्ला 14 को हुआ ।इनके पिता का नाम आईदान जी तथा माता का नाम कल्लू जी था ।ओसवाल जाति में गोलछा गोत्र के थे ।इनके दो बड़े भाई सरूपचन्द जी और भीमराज जी थे।

रोगाक्रांत:-

बालक जीतमल एक बार बहुत ज्यादा बीमार हो गए तब उनके बुआ महाराज साध्वीश्री अजबु जी का गांव में आना हुआ। बालक जीतमल की बीमारी की बात सुनकर वे दर्शन देने आई और कल्लू जी को संकल्प करवाया कि यदि बालक स्वस्थ होकर मुनि दीक्षा ले तो मैं उसे रोकूंगी नहीं ।माता के इस संकल्प को स्वीकार करते ही बालक जीतमल स्वस्थ होने लग गये।

दीक्षा:-

आचार्य भारमल जी जयपुर में थे तो इनका पूरा परिवार हमेशा के लिए गुरु के चरणों में समर्पित होने को उत्सुक था। भारमलजी ने सरूपचंद जी को दीक्षा दे दी तो जीतमल का मन और ज्यादा छटपटाने लगा। बालक जीतमल की बढ़ती वैराग्य भावना देख भारमलजी ने दीक्षा की तिथि माघ कृष्णा सप्तमी निश्चित कर दी। विक्रम संवत्1869 को ऋषिराय के हाथों बालक जीतमल का दीक्षा संस्कार संपन्न हुआ ।

मुख्य विशेषता :-

मुनि जीतमल को विद्याभ्यास के लिए हेमराज जी को सौंप दिया। गुरुभक्त, संस्कारी कवि, एकाग्रता, स्वाध्याय, प्रेम इनके जीवन की मुख्य विशेषता थी ।

महान आचार्य :-

विक्रम संवत 1908 बीदासर में आपने आचार्य पद को सुशोभित किया। इस संघ में आचार्य बनते ही अनेक नई मर्यादाएं बांधी। तेरापंथ धर्म संघ को तीन महोत्सव चरमोत्सव , पट्टोत्सव,मर्यादामहोत्सव, दिए।सम्पूर्ण तेरापन्थ धर्मसंघ के संचालन की जो व्यवस्था की वह एक स्वतंत्रत ग्रंथ का विषय है, जो हमारे लिए सदैव प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेंगे।

महाप्रयाण :-

विक्रम संवत 1938 भाद्रपद कृष्ण द्वादशी जयपुर में आचार्य जीतमल जी का महाप्रयाण हो गया।

पाठ क्रमांक 12 (जैन पर्व)

1. भगवान ऋषभदेव ने किसके हाथ से पारणा किया?

   अपने प्रपौत्र श्रेयांस कुमार के हाथ से।

2. अक्षय तृतीया कौन से महीने में आती है?

   वैशाख महीने में।

3. अक्षय तृतीया नाम क्यों हुआ?

   जिसका क्षय न हो वह अक्षय और तृतीया के दिन जैनों के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव में 1 वर्ष 40 दिन की तपस्या का पारणा किया था इसलिए यह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

4. महावीर जयंती कौन सी तिथि एवं किस महीने में आती है?

   चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को।

5. दीपमालिका क्यों मनाई जाती है?

   कार्तिक कृष्णा अमावस्या को भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था उस समय पावा में अनेक राजा भगवान का चरमोत्सव मनाने आए हुए थे उन्होंने घर घर दीप जलाकर भगवान का निर्वाण दिवस मनाया था उसी दिन का अनुसरण करते हुए दीप जलाकर दीपमालिका मनाई जाती है।

6. पर्युषण पर्व कितने दिन मनाया जाता है?

8 दिन

7. पर्युषण पर्व के अंतिम दिन को क्या कहते हैं?

संवत्सरी

8. पर्व किसे कहते हैं? जैनों के मुख्य पर्व कौनसे हैं ,वर्णन करें ?

किसी तिथि को ऐतिहासिक मानकर उस पर उत्सव करना पर्व कहलाता है। जैनो के मुख्य पर्व चार हैँ।

अक्षयतृतीया,पर्युषण,महावीर जयंती और दीपावली।

अक्षय तृतीया(आख़ातीज):-

जिसका क्षय नहीं हो वह अक्षय और भगवान के पारणे का दिन तृतीया तभी से अक्षय तृतीया जैनो का ऐतिहासिक त्यौंहार बन गया।इस दिन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ ने 1 वर्ष 40 दिन की तपस्या का पारणा किया था।हस्तिनापुर के राज महल में बाहुबली का पोत्र श्रेयांश कुमार झरोखे में बैठा था । उसकी नजर भगवान ऋषभदेव पर पड़ी जो उस समय राज महल के निकट से गुजर रहे थे। पूर्व भव के संस्कारों का स्वाभाविक स्नेह जगा उन्हे जातिस्मृति ज्ञान हुआ। राजकुमार नंगे पांव दौड़े, भगवान को वंदन किया भिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह किया उस दिन श्रेयांश कुमार के महल में इक्षुरस की भेन्ट आई हुई थी ।कुमार ने इधर उधर देखा भिक्षा के योग्य पदार्थ नहीं मिला ।एक और इक्षुरस के घड़े रखे थे कुमार अपने हाथ से दान देने के लिए तैयार हुआ।भगवान के पास कोई पात्र नहीं था उन्होंने दोनों हाथ की निश्छिद्र अंगुलियां मुंह पर टिका ली और जितना आवश्यक था उतना रस लेकर भगवान ऋषभ ने पारणा किया।लोगों ने भगवान के घर घर परिव्रजन का रहस्य समझा उस दिन से तृतीया का महत्व और अधिक बढ़ गया और यह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

पर्युषण-

जैन धर्म का सब से बड़ा धर्माराधना का पर्व आठ दिन तक मनाया जाता है।इस को अष्टान्हिक पर्व भी कहते है।यह भाद्र कृष्णा त्रयोदशी से प्रारम्भ हो

कर भाद्र शुक्ला पंचमी तक मनाया जाता है।अंतिम दिन को संबत्सरी महापर्व कहते हैं।दिगम्बर परम्परा में इसे दशलक्षण पर्व भी कहा जाता है।

महावीर जयंती—

इस दिन चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला 13 को हुआ ।इस दिन प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकार द्वारा अवकाश होता है।

दीपावली-

इस दिन कार्तिक कृष्णा अमावस्या को भगवान् का निर्वाण हुआ था।उस समय अनेक राजा भगवान् का चरमोत्सव मनाने आए हुए थे।घर -घर दीप जला कर निर्वाण दिवस मनाया था।

पाठ क्रमांक 13 (नौ तत्त्व)

1. तत्त्व कितने हैं? उनके नाम बताओ?

   तत्त्व 9 है। जीव, अजीव,पुण्य, पाप,आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष।

2. पुण्य का क्या अर्थ है?

   आत्मा अपनी शुभ प्रवृत्ति के द्वारा जिन कर्म पुदगलों को ग्रहण करती है उन शुभ कर्म पुदगलों को पुण्य कहते हैं।

3. कर्म ग्रहण करने वाले जीव के परिणाम कौन सा तत्व है?

   आश्रव तत्व।

4. जीव और अजीव में क्या अंतर है?

   जीव-

   1.जिसमें चेतना प्राण शक्ति हो।

   2.जिसमें जानने व सुख दुख का अनुभव करने की प्रवृत्ति हो।

   3.जिसमें अपने सदृश संतति पैदा करने की क्षमता हो।

   4.जीव का गुण चैतन्य है।

   अजीव-

   1.जिसमें चेतना प्राणशक्ति ना हो।

   2.जिस में जानने व सुख दुख का अनुभव करने की शक्ति ना हो।

   3.जिसमें संतति पैदा करने की क्षमता ना हो।

   4.अजीव का गुण अचैतन्य है।

पाठ क्रमांक 14 (नौ तत्त्व एक विश्लेषण)

1. आश्रव को किस उपमा से बताया गया है?

   तालाब के नाले,मकान के द्वार, और नौका के छेद की उपमा से बताया गया है।

2. बंध किसे कहते हैं?

   जीव के साथ शुभ अशुभ कर्म का आपस में मिलना बंध कहलाता है।

3. आश्रव और जीव एक है या दो?

   आश्रव और जीव एक है ।जैसे तालाब और नाला ,मकान और द्वार, नौका और छेद एक है वैसे ही जीव और आश्रव एक हैं।

पाठ क्रमांक 15 (छः द्रव्य)

1. छह द्रव्यो के नाम बताओ?

   धर्मास्तिकाय
   अधर्मास्तिकाय
   आकाशास्तिकाय
   काल
   पुद्गलास्तिकाय
   जीवास्तिकाय

2. ठहरने में सहयोग देने वाला कौन सा द्रव्य है?

   अधर्मास्तिकाय।

3. क्या आलोककाश मे जीव पाए जाते हैं?

   नहीं अलोकाकाश में जीव नहीं पाए जाते हैं।

4. अस्तिकाय किसे कहते हैं?

   अस्ति का अर्थ है- प्रदेश और काय का अर्थ है- समूह। प्रदेश समूह को अस्तिकाय कहते हैं।

5. छः द्रव्य की परिभाषा बताएं।

जीव और पुद्गल दोनो गतिशील है। उनकी गति में जो उदासीन भाव से सहयोग देता है उस द्रव्य को धर्मास्तिकाय कहते है।

अधर्मास्तिकाय

जो जीव और पुद्गल को ठहरने मे सहयोग देता है।उसे अधर्मास्तिकाय कहते है।

आकाशास्तिकाय

जो जीव और पुद्गल को रहने के लिए स्थान देता है उसे आकाश कहते है।

काल

जो रात-दिन का निमित्त है,जो वस्तुओं की पर्यायों के बदलने का हेतु है,उसे काल कहते है।व्यवहार मे हम समय ,मिनट., घडी,दिन,रात, को काल कहते है।

पुद्गलास्तिकाय

जो वर्ण, गंध, रस ,स्पर्श युक्त होता है।वह पुद्गलास्तिकाय कहलाता है।हम पदार्थ में जो परिवर्तन देखते है वह पुद्गलास्तिकाय का ही स्वभाव है।

जीवास्तिकाय

जो चेतनावान है,ज्ञानवान है,जो जानता है,देखता है,वह जीवास्तिकाय है।

6. द्रव्य किसे कहते हैं ?उनके प्रकार बताते हुए किन्हीं दो का वर्णन करो?

द्रव्य-

जिसमें गुण और पर्याय दोनों होते हैं उसे द्रव्य कहते हैं ।गुण का अर्थ है- सदा साथ में रहने वाला धर्म और पर्याय का अर्थ है -बदलने वाला धर्म।

द्रव्य के प्रकार:- द्रव्य 6 प्रकार के हैं ।

धर्मास्तिकाय,अधर्मास्तिकाय ,आकाशास्तिकाय , काल ,पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकायआदि।

अधर्मास्तिकाय -

जो जीव और पुद्गल को ठहरने में सहयोग देता है उसे अधर्मास्तिकाय कहते हैं ।चिलचिलाती धूप में पथिक जा रहा है आम्र वृक्ष की छाया देखकर वह बैठ जाता है ठहर जाता है छाया पथिक के ठहरने में सहयोगी बनी उसी प्रकार यह द्रव्य के ठहरने मे सहयोगी बनता है।

आकाशास्तिकाय:-

जो जीव और पुद्गल को रहने के लिए स्थान देता है उसे आकाश कहते हैं वह दो प्रकार का है लोकाकाश और अलोकाकाश। जहां छः द्रव्य होते हैं उसे लोकाकाश कहते हैं और जहां मात्रआकाश हो उसे अलोकाकाश कहते हैं।

पाठ क्रमांक 16 (द्रव्य कहाँ है?)

1. आकाश कहां फैला हुआ है?

   आकाश सब जगह (लोक और अलोक) में फैला हुआ है।

2. सामने बिजली का लट्टू जल रहा है बताओ उसमें कौन-कौन से द्रव्य है?

   इसमें छहों द्रव्य है।

3. हम किसके सहारे चलते हैं?

   हम धर्मास्तिकाय के सहारे चलते हैँ।

4. तुम किसके सहारे ठहरते हो?

   हम अधर्मास्तिकाय के सहारे ठहरते हैं।

पाठ क्रमांक 17 (रुपी-अरुपी)

1. ऊपर जो नीला नीला सा दिखता है वह क्या है?

   रज कण

2. तुम किस चीज को देख सकते हो?

   हम रूपी चीजों को देख सकते हैं।

3. धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय रूपी है?

   नहीं

4. छः द्रव्य में अरूपी द्रव्य कितने हैं?

   5

5. क्या आकाश के बिना कोई चीज रह सकती है?

   नहीं

पाठ क्रमांक 18 (धर्म की पहचान)

1. जहां राग द्वेष की प्रवृति होती है वहां धर्म होता है या नहीं?

   नहीं

2. क्या देवगुरु धर्म के लिए हिंसा करना धर्म है?

   नहीं क्योंकि हिंसा अधर्म है।

3. क्या शुद्र, म्लेच्छ आदि लोगों को धर्म करने का अधिकार नहीं है?

   भगवान महावीर ने धर्म करने का अधिकार मानव मात्र को दिया है। इसलिए शूद्र ,म्लेच्छ लोगों को धर्म करने का अधिकार है।

4. धर्म का लक्षण क्या है?

   "आत्मशुद्धि साधनं धर्मः" जिन उपायों से आत्म शुद्धि हो सके उनको धर्म कहते हैं। यही धर्म का लक्षण है।

पाठ क्रमांक 19 (धर्म स्थान)

1. धर्म स्थान में जाने का उद्देश्य क्या है?

   धर्म स्थान में जाने का उद्देश्य आत्म ज्ञान पाना है।

2. धर्म स्थान में जाने पर दिल में क्या क्या प्रश्न उठते हैं?

   धर्म-स्थान में जाने पर दिल में प्रश्न उठते हैं कि हम कौन हैं ? कहां से आए हैं ? और कहां जाएंगे? हम किस ओर जा रहे हैं? निजी चीज क्या है ? हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए ? हम अपने आपको क्यों नहीं पहचानते ? अपना स्वरूप जानने में कौन बाधा डाल रहा है? प्राणी मात्र में इतना अंतर कैसे हैं ? आदि अनेक प्रश्न उठते हैं।

3. धर्म-स्थान पर क्या क्या करना चाहिए?

   धर्म स्थान पर जाकरअहिंसा,सत्य,अचौर्य,ब्रह्मचर्य,अपरिग्रह आदि व्रतों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

भगवान महावीर की वाणी समयं गोयम!मा पमायए की शिक्षा पर अमल करने का प्रयास करना चाहिए।
साधु-साध्वियों की सेवा का लाभ उठाना चाहिए।

पाठ क्रमांक 20 (आशातना)

1. निर्मल जब रजोहरण को लांघकर आगे जाने लगा तो विमल ने उसे क्यों रोका ?

क्योंकि रजोहरण साधुओं का होता है और उसे रूकावट के लिए रखा गया है ।उसे लांघकर जाने से आशातना लगती है।इसलिए विमल ने निर्मल को रोका।

2. आशातना किसे कहते हैं ?

गुरुओं के प्रति अनुचित बर्ताव (व्यवहार)करने को अशातना कहते हैं ।

3. आशातना क्यों नहीं करनी चाहिए ?

आशातना करने से पाप कर्म का बन्ध होता है ।
देखने में बुरा मालूम होता है।
यह अशिष्टता है

4. यदि आशातना हो जाये तो क्या करना चाहिए ?

अगर आशातना हो जाये तो विनीत भाव से क्षमा मांग लेनी चाहिए ।

5. आशातनाएँ कौन कौन - सी होती है?

अनेक प्रकार की आशातनाएं

- रुकावट के लिए रखे गए रजोहरण को लांघ कर जाना।
- साधुओं की ओर पीठ करके बैठना।
- साधुओं के चिपककर बैठना।
- साधुओं के बराबर बैठना।
- साधुओं के सटकर खड़ा रहना।
- बिना पूछे बीच में बोलना।
- व्याख्यान के बीच में बोलना।
- व्याख्यान के बीच में उठकर चले जाना।
- वंदना करते समय साधुओं के चरणों को छूते हुए हाथों की घसीट सी लगा देना।

पाठ क्रमांक 21 (तेरापंथ की मर्यादाएं)

1. तेरापंथ का संचालन कौन करता है ?

   तेरापंथ का सञ्चालन आचार्य करते हैं।

2. आचार्य का निवार्चन कौन करता है ?

   आचार्य का निर्वाचन पूर्ववर्ती आचार्य करते हैं।

3. गण के प्रति किनका उत्तरदायित्व होता है?

   प्रत्येक साधु-साध्वी विशेषतः आचार्य गण के प्रति पूर्ण उत्तरदायी होते हैँ।

4. आचार्य के मुख्य-मुख्य कार्य बताओ ?

   आचार्य के मुख्य कार्य-

   • गण को सुव्यवस्थित रखना एवं कुशलतापूर्वक समूचे गण का संचालन करना।

   •उत्तराधिकारी चयन- यह एक आचार्य के कौशल की कसौटी और उनके जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

   •दीक्षा देना अथवा दीक्षा प्रदान करने की अनुमति देना।

   • साधु- साध्वियों का रहना- विहार करना ।

   • देश-विदेश में धर्म प्रचार करना;

   • रोगी साधुओं की सेवा करना;

   • व्यवस्था भंग करने वाले को दंड देना;

   • किसी को संघ से अलग करना।

   आदि कार्य आचार्य द्वारा सम्पादित होते हैँ।

5. क्या आचार्य की अनुमति के बिना कोई दीक्षा दे सकता है?

   नहीं

6. किसी में त्रुटि देखी जाये तो क्या करना चाहिए?

   यदि कोई गण के किसी सदस्य में त्रुटि (गलती) देखे तो उसका कर्तव्य है कि वह उसको सावधान कर दे। और यदि फिर भी ना माने तो आचार्य को उसकी सूचना देदे,किंतु इसके विपरीत यदि वह और किसी को कहता है तो स्वयं दोषी ठहर जाता है और यह समझा जाता है कि वह उस साधु से दूसरों के मन फांटना चाहता है।

7. तेरापंथ की मर्यादाएं कौनसी है?

तेरापंथ की क्या पहचान - एक गुरु और एक विधान।
अर्थात् तेरापंथ धर्म-संघ का संचालन एक आचार्य द्वारा किया जाता है।
वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी इसका संचालन कर रहे हैं।

तेरापंथ की अद्भुत मर्यादाएं

★ मर्यादाओं में गण को बड़ा महत्त्व दिया गया है। गण को संचालित एवं सुव्यवस्थित रखने के लिए एक आचार्य होते हैं। वे गण में से ही चुने जाते हैं।

★ आचार्य का निर्वाचन पूर्ववर्ती आचार्य ही करते हैं।

★ आचार्य का आदेश सर्वमान्य अर्थात बिना किसी हिचकिचाहट मान्य होता है।

★ दीक्षित करने के अधिकारी एक मात्र आचार्य ही होते हैं।

★ सभी एक आचार्य के शिष्य कहलाते हैं।

★ प्रत्येक साधु-साध्वी एवं विशेषकर आचार्य गण के प्रति पूर्ण जिम्मेदार होते हैं।

★ कोई भी साधु-साध्वी गण या गण के किसी भी सदस्य की उतरती बात नहीं कर सकता।

• संघ को सुव्यवस्थित रखने के लिए आचार्य समय - समय पर नियम बनाते हैं जिसे सभी सहर्ष स्वीकार करते हैं।

• संघ और संघपति के प्रति निष्ठा के कारण ही आज तेरापंथ धर्मसंघ की एकता बनी हुई है। यही इसकी प्रतिष्ठा और प्राण है।

पाठ क्रमांक 22 (क्षमायाचना)

1. खमत खामणा का अर्थ बताओ?

व्यक्ति के आपस में कोई बोलचाल मनमुटाव वैर विरोध या अनुचित बर्ताव हो जाए तो उसके लिए निर्मल मन से क्षमा मांगने और दूसरों को क्षमा देने को खमत खामणा कहते हैं।

2. खमत खामणा कैसे करना चाहिए?

जिस व्यक्ति से वैर विरोध है वह अगर सामने हो तो उनसे प्रत्यक्ष रुप से हाथ जोड़कर क्षमा मांग लेनी चाहिए और यदि सामने न हो तो मन ही मन उनको याद कर मन से विरोध भाव को हटाकर क्षमा याचना कर लेनी चाहिए।

3. खामेमि सव्वजीवे का अर्थ बताओ?

मैं सब जीवों को क्षमा करता हूं वे सब मुझे क्षमा करें । मैं सबका मित्र हूं किसी से भी मेरा विरोध नहीं है।

4. संवत्सरी के दिन खमत खामणा ना करने से क्या होता है?

संवत्सरी के दिन खमत खामणा ना करने से व्यक्ति का सम्यक्त्व चला जाता है ।मन में वैर विरोध की गांठे बंध जाती है और शत्रुता का भाव बढ़ता है।

5. क्षमा याचना पाठ से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

खमत खामणा वैर विरोध को मिटाने और मित्रता बढ़ाने तथा अपने मन को भी शुद्ध रखने का महान उपक्रम है।इसलिए हमें सदैव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सभी जीवों से खमतखामणा करना चाहिए।क्षमा याचना का अर्थ है परस्पर मनमुटाव या अनुचित बर्ताव होने पर क्षमा मांगना और क्षमा करना।
हमें यह शिक्षा मिलती है कि परस्पर गांठें नहीं बांधना चाहिए ।मन को पवित्र एवं निर्मल रखना चाहिए ।सब के प्रति मित्रता का भाव रखना चाहिए ।भूल होने पर क्षमा मांगनी चाहिए और दूसरों की भूलों को भी सहज मन से माफ कर देना चाहिए। पक्खी और विशेष दिनों में प्रतिक्रमण करके प्रत्यक्ष और परोक्ष सभी जीवों से खमतखामणा करना चाहिए ।संवत्सरी पर्व पर जो खमतखामणा नहीं करता उसका सम्यक्तव चला जाता है ।मन मलिन और आत्मा भारी बन जाती है ।इसीलिए क्षमा याचना आपसी वैर विरोध मिटाने एवं एक दूसरे के निकट आने का अच्छा उपक्रम है जो हमारी आत्मा को पवित्र और निर्मल तो बनाता ही है साथ ही विनय क्षमा मित्रता के भाव को भी पुष्ट करता है।

पाठ क्रमांक 23 (मृत्युञ्जयी थावच्चापुत्र)

1. थावच्चा पुत्र ने छत पर बैठ कर क्या सुना?

थावच्चा पुत्र ने छत पर बैठकर मधुर मधुर गीत सुने।

2. थावच्चा पुत्र के वैराग्य का क्या कारण था?

मधुर गीत व रोने की आवाज सुनकर थावच्चापुत्र ने जन्म-मरण के रहस्य को जाना।यही वैराग्य के निमित्त बने।

3. माता ने थावच्चापुत्र को मृत्यु से बचने का क्या उपाय बताया?

माता ने बताया कि जो व्यक्ति साधना के द्वारा अपने कर्मों को नष्ट कर देता है वह मौत से बच जाता है फिर वह न तो जन्मता है और न ही मरता है वह अमर हो जाता है।

4. मृत्युंजयी थावच्चा पुत्र की कहानी अपने शब्दों में लिखो?

थावच्चा पुत्र एक दिन अपनी अट्टालिका पर खड़ा था। उसके कान में मधुर मधुर गीत सुनाई दिए। वह उन्हें सुनता गया उसे बड़ा अच्छा लगा पर वह जान न सका की गीत का भावार्थ क्या है?वह अपनी माता के पास आया और सरलता से पूछने लगा मां यह गीत कहां से आ रहे हैं ?मां ने कहा- बेटा पड़ोसी के घर में पुत्र का जन्म हुआ है उसकी खुशी के गीत गाए जा रहे हैं ।अच्छा पुत्र! उत्पन्न होने पर इतनी खुशी होती है।"हां बेटा"माता ने कहा। "तो क्या मैं पैदा हुआ था तब भी इस तरह के गीत गाए थे" थावच्चापुत्र अपने बचपन के स्वाभाविक भोलेपन के साथ पूछ बैठा माता ने कहा -जब तुम्हारा जन्म हुआ था तब एक दिन ही नहीं कई दिन इससे भी ज्यादा मधुर गीत गाए गए थे ।खुशियां मनाई गई थी। पुत्र ने कहा मां "मेरे कान उन गीतों को सुनने के लिए लालायित है वह भागा भागा छत पर आया और ध्यान से गीत सुनने लगा पर अब उन गीतों में मधुरता नहीं थी ।वह आश्चर्य में पड़ गया क्या बात है? कुछ समझ में नहीं आया वह पुनः दौड़ा-दौड़ा माता के पास आया और पूछने लगा" मां गीतों में इतना अंतर क्यों हो गया?उसकी मधुरता क्यों नष्ट हो गई यह गीत कानों को बड़े अप्रिय लगते हैं।" पुत्र की बात सुनकर माता की आंखों में आंसू आ गए वह बोली "बेटा हमारे उस पड़ोसी का पुत्र मर गया। अभी जन्मा और अभी मर गया पुत्र ने कहा ।"बेटा मरना जीना किसी के बस की बात नहीं वह जन्मा तब गीत गाए गए वह मर गया अब रो रहे हैं ।तो मां क्या तुम भी मरोगी? हां बेटा मरना सबको पड़ता है मैं भी एक दिन मरूंगी। माता ने कहा ।क्या मुझे भी मरना होगा? थावच्चापुत्र ने कहा ।बेटा ऐसा प्रश्न नहीं करना चाहिए ।मां क्या आपत्ति है मुझे बताने में ?हां एक दिन तुम भी मरोगे इस संसार में कोई प्राणी अमर नहीं रहता ।क्या मृत्यु से बचने का कोई उपाय है? माता ने थावच्चापुत्र से

कहा -हां बेटा इसका उपाय है जो व्यक्ति साधना के द्वारा अपने कर्मों को नष्ट कर देता है वह मौत से बच जाता है फिर वह न जन्मता है और न मरता है वह अमर हो जाता है ।मां साधना के लिए क्या करना होता है? बेटा मुनि जीवन साधना करने का उचित अवसर देता है ।मुनि जीवन में ध्यान की उत्कृष्ट साधना करने से मुक्त हो जाता है माता की बातों को सुनकर भावनाओं में वैराग्य बढ़ता गया ।मां पुत्र के वैराग्य से प्रसन्न हुई। एक दिन 22 वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि शहर में पधारे। बालक थावच्चापुत्र भगवान् के दर्शन करने गया। भगवान की वाणी का उस पर ऐसा असर हुआ उसका वैराग्य तीव्र हो उठा।भगवान के पास दीक्षा ग्रहण कर हमेशा के लिए मृत्युंजयी बन गया।

पाठ क्रमांक 24 (अर्हन्नक की आस्था)

1. देवता ने अर्हन्नक को धर्म छोड़ने के लिए क्यों कहा ?

   देवता अर्हन्नक की धर्म के प्रति दृढ़ता की परीक्षा करना चाहता था। इसलिए देवता ने अर्हन्नक को धर्म छोड़ने के लिए कहा।

2. यात्रियों ने अर्हन्नक से क्या कहा ?

   यात्रियों ने देवता द्वारा दी गई चेतावनी से भयभीत होते हुए कहा- तुम इतनी जिद्द क्यों करते हो ?एक बार कह दो कि मैंने धर्म छोड़ दिया है इससे हमारे प्राण भी बच जाएंगे और तुम भी सुरक्षित रहोगे । यदि तुम अपनी जिद्द पर अड़े रहोगे तो पोत के सारे यात्री मारे जाएंगे।

3. अर्हन्नक के दृढ़ रहने पर देवता ने क्या किया ?

   देवता ने जब अंतःकरण में प्रविष्ट होकर देखा कि अर्हन्नक इतना डराने धमकाने के बाद भी वैसे ही अभय और धर्मनिष्ठ है तो देव अर्हन्नक के चरणों में झुक गए।

4. 'अर्हन्नक की आस्था' कथा का सार अपने शब्दों में लिखें?

   अर्हन्नक एक धर्मनिष्ठ श्रावक था, जिसने धर्म के मर्म को जाना ।एक बार वह समुद्र यात्रा कर रहा था तब उसके सामने एक देव उपस्थित हुआ और कहने लगा -तुम धर्म को छोड़ दो वरना मैं तुम्हारे जलपोत को डुबो दूंगा। अर्हन्नक जीवन मृत्यु से परे एक धार्मिक श्रावक था। वह अडिग रहा। देव ने उसे अनेक प्रकार से डराया -धमकाया ।यह देखकर नाव के सभी यात्री भयभीत हो गए

और अर्हन्नक पर धर्म छोड़ने का दबाव डालने लगे। अर्हन्नक फिर भी अडिग रहा। उसकी दृढधर्मिता देख कर देव ने पोत को आकाश में उठा लिया फिर भी वह विचलित नहीं हुआ। यह देखकर देव का हृदय बदल गया ।देव अर्हन्नक के चरणों में झुक गया। पोत में बैठे सभी यात्री आश्चर्यचकित हो गए।
इस कथा से हमें शिक्षा मिलती है कि जो व्यक्ति धर्म में दृढ रहता है उसे कोई भी शक्ति नुकसान नहीं पहुंचा सकती अतः हमें अपने धर्म के प्रति आस्था और विश्वास रखते हुए दृढ़ रहना चाहिए।

पाठ क्रमांक 25 (मधुर वाणी)

1. कोयल प्यारी क्यों लगती है?

क्योंकि कोयल की आवाज बहुत मधुर होती है इसलिए वह सबको बहुत प्यारी लगती है।

2. वाणी का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

वाणी का प्रयोग हमेशा प्रियवचन से करना चाहिए। हंसी मजाक में भी कभी ऐसे वचन नहीं बोलने चाहिए जिससे किसी का दिल दुःखे क्योंकि भारतीय संस्कृति में प्रिय वचन को ही सत्य वचन के बराबर माना गया है।

3. भारद्वाज की कथा का सार बताओ ?

यदि कोई हमें क्रोधवश कटु वचन अर्थात् गालियां बोले तो हमें वापस कटु वचन नहीं बोलना चाहिए बल्कि मुस्कुराना चाहिये जिससे क्रोधित व्यक्ति अपने आप शांत हो जाए।अपने आपको महान् बनाने के लिये सदैव प्रिय वचन बोलना चाहिए ।

4. मधुर वाणी पाठ में वर्णित घटनाओं को अपने शब्दों में लिखो।

कवि ने कहा है-

कागा किसका लेत है,कोयल किसको देत।

बोली के ही कारणे,जग अपनो करि लेत॥

न तो कौआ किसी का कुछ लेता है और न कोयल किसी को कुछ देती है ।पर कोयल की बोली सुनकर मन प्रसन्न होता है।
मधुर वाणी सभ्य व्यक्ति का लक्षण है।बहुत सारे बालक हंसी मजाक में ऐसे वचन बोल देते हैं कि जिससे दूसरे का दिल दुखी होता है ।

इसलिए भारतीय संस्कृति मैं प्रिय वचन को सत्यवचन के बराबर माना गया है और कहा गया है- सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात् मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। अर्थात् सत्य बोलो और प्रिय बोलो ,ऐसा सत्य मत बोलो जो अप्रिय हो।

एक दुष्ट व्यक्ति जा रहा था उसे सामने एक अंधा आदमी मिला ।उसने कहा अंधे बाबा राम राम ।अंधे ने बोला दुर्जन भाई राम राम। तो दुष्ट व्यक्ति ने कहा तुम्हें कैसे पता चला कि सामने वाला दुर्जन है कि सज्जन। उसने कहा तुम्हारी बोली से पता चल गया ।इसलिये कभी भी व्यक्ति को कड़वा वचन नही बोलना चाहिये।

चूड़ी बेचने वाला भी गधी पर माल लादकर गधी को भी चल मेरी मां चले मेरी बहन कहकर पुकार रहा था। क्योकि चुडी वाला व्यक्ति कहता है कि इससे मेरी वाणी भी पवित्र रहती है और मन भी पवित्र रहता है।

कुछ लोग अपने नौकरों को भी गाली देते है जिससे घर मे बच्चे भी गालियां देना सीख जाते हैं।

एक बार भगवान बुद्ध के पास भारद्वाज आया । बुद्ध प्रवचन दे रहे थे ।वो आते ही गालियां देने लग गया बुद्ध कुछ नहीं बोले एक व्यक्ति गाली दे दुसरा ना दे तो अपने आप शान्ति हो जाती हैं।ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती ।

यदि कोई अप्रिय वचन कहे तो महान आदमी उसे कटु वचन नहीं कहता , क्योंकि वह जानता है कि गाली वही व्यक्ति देता है जिसके पास गालियों का खजाना भरा हुआ है,जिसके पास गाली नहीं है,वह गाली कैसे देगा ? अतः अपने आप को महान बनाने के लिए हमें सदा प्रिय वचन बोलना चाहिए।

शिक्षा-

हमें सदा अप्रिय वचन से बचना चाहिए।

पाठ क्रमांक 26 (सरलता का परिणाम)

1. डाकू बालक से क्यों प्रभावित हुए ?

बालक ने जब ईमानदारीपूर्वक अपनी मोहरें डाकुओं के सामने रख दी तब बालक की सरलता से प्रभावित होकर डाकुओं ने डाका डालना छोड़ दिया।अर्थात् डाकू बालक की सरलता से प्रभावित हुए।

2. गांधी जी अंग्रेजों के श्रद्धापात्र कैसे बने ?

भारतीय व्यक्ति जब अंग्रेज़ों का जासूस बनकर गांधी जी की दिनभर की खबरें अंग्रेज़ों तक पहूंचाया करता था तब गांधी जी बोले तुम इतना कष्ट क्यों करते हो मै अपनी सारी चर्या तुम्हें बता दूंगा ।तब यह बात अंग्रेज़ों तक पहुंची तो उन्होंने सोचा हम जिसको अपना शत्रु मानते हैं,वही व्यक्ति हमारे प्रति इतना सरल है ।इसी बात से उनका सिर गांधी के प्रति श्रद्धा से झुक गया ।

3. इस पाठ में वर्णित घटनाओं से तुम्हें क्या प्रेरणा मिलती हैं ?

इस पाठ मे वर्णित घटनाओं से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि सरलता से कही गयी बात दूसरों का हृदय परिवर्तित कर देती है।सरलता केवल धर्म ही नहीं अपितु वह एक बहुत दूरगामी नीति भी है।

4. "सरलता का परिणाम" कहानी अपने शब्दों में लिखो?

बच्चा हर व्यक्ति को प्रिय लगता है ।कभी-कभी सरलता से कही गई बात का इतना प्रभाव होता है कि बड़ी बुराई भी उखड़ जाती है ।एक बार की बात है अरब देश का एक ग्रामीण लड़का एक कबीले के साथ पढ़ने के लिए शहर जा रहा था। बच्चे का पिता मर चुका था। अतः प्रस्थान करते समय उसकी मां ने उसकी व्यवस्था के लिए मोहरे उसके कपड़े मे सील दी और कहा शहर जाकर तुम खूब मन लगाकर पढ़ना ।कभी झूठ मत बोलना जब भी आवश्यकता हो तो मोहरे बेच कर अपना काम चला लेना ।बच्चा मां की सीख ले कर चल पड़ा ।रास्ते में डाकूओं ने कबीले को घेर लिया तथा उनके पास जो कुछ था उसे लूट लिया ।पर उन्हें बच्चे की मोहरें नहीं मिली ।अतः वह बच्चे के पास ही रह गई ।सब कुछ छीन लेने के बाद अंत में डाकू ने कहा "किसी के पास अगर कुछ और धन हो तो यहां रख दो" बच्चा झट से आगे आया और कपड़े में सीली हुई मोहरें डाकू को दिखाते हुए बोला "मेरे पास यह है"
डाकू बालक की सरलता से मुग्ध हो गए थे सोचने लगे यदि यह बच्चा हमें नहीं कहता तो हमें पता भी नहीं चलता इसके पास मोहरे हैं। उन्होंने उससे पूछा "तुमने हमें यह मोहरे क्यों बताई ?बालक ने उसी सरलता से कहा -जब मैं अपने घर से रवाना हुआ तो मां ने कहा था कभी झूठ मत बोलना ।अतः मैंने आपके सामने सारी बात सच सच बता दी ।डाकू बालक की सरलता को देखकर आश्चर्यचकित रह गए उन्होंने सोचा कहां हम है जो दिन भर डाका डालते हैं और कहां यह छोटा बालक है जो अपनी मां की सीख मानकर झूठ नहीं बोलता ।उनका हृदय परिवर्तित हो गया ।उन्होंने सारे कबीले का धन वापस दे दिया

और डाका डालना छोड़ दिया ।इस कहानी से हम यह समझ सकते हैं कि सरलता से कही हुई बात भी कितना बड़ा प्रभाव डाल सकती है।

पाठ क्रमांक 27 (धन अनर्थ का मूल है)

1. बडे भाई ने नोली को नदी मे क्यों बहाया ?

   नोली के कारण बड़ा भाई छोटे भाई को मारने के लिए तैयार हो गया लेकिन तत्क्षण विचार परिवर्तित हुए और सोचा कि जो धन मुझे मेरे भाई से दूर कर सकता है वह धन मेरे लिए कैसे सुखद होगा? इसलिये उसने नोली को पानी में बहा दिया।

2. बेटी ने मां की हत्या क्यों की?

   बेटी ने धन के लालच में आकर मां की हत्या कर दी ।

3. धन को अनर्थ का मूल क्यों कहा गया है?

   कहानी के अनुसार धन के कारण एक बेटी ने अपनी मां की हत्या कर दी। धन के कारण ही व्यक्ति के मन में लालच, अहंकार और विपरीत बुद्धि हो जाती है। भाई-भाई का दुश्मन हो जाता है; प्रिय भी अप्रिय हो जाता है; व्यक्ति अपनी सद् प्रवृत्ति तक छोड़ देता है; धन जीवन के अमूल्य रिश्तों में फुट डलवा देता है। इसलिए धन को अनर्थ का मूल कहा गया है।

4. मां की हत्या कर भागती हुई बहिन से भाईयों ने क्या कहा ?

   भाईयों ने कहा बहिन ले जा इस नोली को मां को मारकर तुमअमर रहोगी यह तुम्हारी नोली अमर रहेगी । थोड़े से धन के लिए क्या यह सब करना उचित था? लेकिन तुम्हारा कोई दोष नहीं यह सब धन की विडंबना है ।

5. धन अनर्थ का मूल कथा का संक्षिप्त में वर्णन करो।

   घटनाक्रम इस प्रकार घटित होता है दो भाई धन कमा कर वापस घर लौट रहे थे । कमाया हुआ धन उन्होंने एक नोली में रखा। बारी बारी से वह अपनी नोली को अपने पास रखते 1 दिन बड़े भाई ने सोचा कि मैं अपने छोटे भाई को नदी में गिरा दूं तो सारा धन मेरा हो जाएगा । और उसी समय उसे अपनी गलती का एहसास हो गया। तब उसने वो नोली नदी में गिरा दी । पूछने पर उसने अपने भाई को सारी घटना बता दी । छोटे भाई ने कहा- अच्छा हुआ मेरे

मन में भी लोभ आया था, शायद मैं भी आप को मार देता। इस प्रकार बातचीत करते हुए वे अपने घर पहुंचे। उनकी बहन ने अपने भाई की आवभगत करने के लिए मछली मंगाई। जब उसे चीरा तो उसके पेट से धन की नोली निकल कर गिर गई।गिरने की आवाज सुनकर पास में सोई मां के पूछने पर उसकी बेटी ने कहा यह आपका भ्रम है। मां भी खाट से नीचे उतर कर आई। और बेटी ने मां पर मुसल से इतना जोर से प्रहार किया कि वहीँ उसका शरीर शांत हो गया। भाइयों ने जब यह देखा तो वह समझ गए कि यह धन ही अनर्थ का मूल है। जिसे हम तो बच गए किंतु माँ नहीं बची।

इस कथा से यह स्पष्ट होता है कि धन अनर्थ की जड़ है। यदि हम अपने लोभ पर नियंत्रण नहीं रखते हैं तो यह धन हमें अंधकार के घेरे में गिरा सकता है।